राष्ट्रीय संगोष्ठी
"चित्रकूट क्षेत्र में पर्यटन की संभावनाएँ एवं समस्याएँ"
आयोजक : समाजशास्त्र विभाग
गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट
दिनाँकः 05-06 फरवरी, 2017

संगोष्ठी आख्या, वक्ताओं के नाम, निष्कर्ष एवं व्यय विवरण

उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश शासन द्वारा वित्तपोषित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी *''चित्रकूट क्षेत्र. में पर्यटन की संभावनाएँ एवं समस्याएँ''* का आयोजन दिनाँक : 05–06 फरवरी, 2017 को समाजशास्त्र विभाग, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट द्वारा किया गया। पंजीकरण एवं जलपान का कार्य प्रातः 08:30 बजे से प्रारम्भ हुआ। प्रातः 10:00 बजे मुख्य अतिथि प्रो0 योगेश चन्द्र दुबे, कुलपति, जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट (उ0प्र0) के द्वारा संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो0 डी0पी0 दुबे, प्राचीन इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ0 बी0के0 पाण्डेय विभागाध्यक्ष हिन्दी गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी चित्रकूट एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ0 निर्मला शर्मा, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज, बाँदा व श्री आलोक द्विवेदी, समाजसेवी, जनपद चित्रकूट ने अपने विचार रखे। इसके पूर्व संयोजक डॉ0 राजेश कुमार पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 तिलकधारी सिंह ने की। संचालन का दायित्व सहसंयोजक अमित कुमार सिंह व डॉ0 संगीता तथा रवि कुमार ने संभाला।

उद्घाटन सत्र के उपरांत 11:45 से 12:00 तक का समय स्वल्पाहार का रहा। इसके पश्चात् 12:00 बजे से 02:00 बजे तक प्रथम तकनीकी सत्र का शुभारंभ हुआ। प्रथम तकनीकी सत्र के वक्ताओं का विवरण निम्नवत् हैं–

प्रथम तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 05.02.2017 समयः 12:00 से 02:00 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय / विश्वविद्यालय का नाम
1	प्रो0 डी0पी0 दुबे	प्रोफेसर प्राचीन इतिहास	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
2.	डॉ0 निर्मला शर्मा	विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज, बाँदा
3.	डॉ0 दिव्या सिंह	एसो0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज, बाँदा
4.	डॉ0 राकेश राणा	असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	एम0एम0 पी0जी0 कालेज, गाजियाबाद
5	डॉ0 कमलेश थापक	डिप्टी रजिस्ट्रार दूरवर्ती शिक्षा	महात्मा गांधी चित्रकूट गामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0

प्रथम तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् 02:00 से 03:00 बजे तक भोजनावकाश का समय रहा। भोजन पश्चात् द्वितीय तकनीकी सत्र का समय 03:00 से 05:00 बजे तक निर्धारित किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र में जो वक्ता उपस्थित रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

द्वितीय तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 05.02.2017 समयः 03:00 से 05:00 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	डॉ0 राजेश कुमार पाल	असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट
2.	डॉ0 राजेश त्रिपाठी	एसो0 प्रोफेसर ग्रामीण प्रबंधन	महात्मा गांधी चित्रकूट गामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
3.	डॉ0 उमेश कुमार शुक्ला	असि0 प्रोफेसर कृषि	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
4.	डॉ0 देवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय	विभागाध्यक्ष ग्रामीण प्रबंधन	महात्मा गांधी चित्रकूट गामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
5	श्री भागवत प्रसाद	निदेशक	अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान सीतापुर चित्रकूट

द्वितीय सत्र के समापन के पश्चात् सभी अतिथियों को सूक्ष्म जलपान कराया गया। इसके पश्चात् इच्छुक प्रतिभागियों ने चित्रकूट भ्रमण किया तथा शेष प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लिया।

दिनाँक 06.02.2017 को प्रातः 08:30 बजे से जलपान के पश्चात् 09:00 बजे से तृतीय तकनीकी सत्र का प्रारम्भ हुआ जो 11:00 बजे समाप्त हुआ। इसमें जो विद्वत्जन वक्ता के रूप में उपस्थित रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

तृतीय तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 06.02.2017 समय 09:00 से 11:00 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय का नाम
1	अमित कुमार सिंह	असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट उ0प्र0
2.	डॉ0 नीलम चौरे	एसो0 प्रोफेसर राजनीति विज्ञान	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
3.	डॉ0 विनोद मिश्रा	असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र	जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट उ0प्र0
4.	डॉ0 रजनीश	असि0प्रोफेसर शिक्षक शिक्षा	जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट उ0प्र0
5	डॉ0 विजय यादव	असि0 प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज बाँदा, उ0प्र0
6.	डॉ0 मनोज अस्थाना	असि0 प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान	पं0 जे0एन0 पी0जी0 कालेज बाँदा, उ0प्र0

तृतीय तकनीकी सत्र के समापन के बाद सूक्ष्म जलपान के उपरांत चतुर्थ तकनीकी सत्र का प्रारम्भ 11:30 से अपराह्न 01:30 तक रखा गया। इस सत्र में जो वक्ता मंचासीन रहे उनका विवरण निम्नवत् है–

चतुर्थ तकनीकी सत्र

(Resource Person) **दिनाँकः 06.02.2016 समय 11:30 से 01:30 बजे तक**

क्र0सं0	नाम	पदनाम	महाविद्यालय/विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम
1	डॉ0 जे0पी0 सिंह	प्रभारी प्राचार्य	राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, चित्रकूट
2.	डॉ0 अम्बरीश राय	असि0 प्रोफेसर (परीक्षा नियंत्रक)	जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट उ0प्र0
3.	डॉ0 हलीम खान	असि0 प्रोफेसर कृषि	अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा, बाँदा
4.	डॉ0 अजय आर0 चौरे	एसो0 प्रोफेसर समाजकार्य	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
5	डॉ0 जयशंकर मिश्रा	एसो0 प्रोफेसर व्यवसायिक कला	महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, म0प्र0
6.	अभिमन्यु सिंह	समाजसेवी	सर्वोदय सेवा संस्थान बेड़ीपुलिया चित्रकूट

चतुर्थ तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात् सभी अतिथियों, शोधकर्ताओं एवं अन्य उपस्थितजनों ने भोजन ग्रहण किया। भोजनोपरांत 02:30 से समापन सत्र का प्रारंभ हुआ जो 04:00 बजे सम्पन्न हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 जे0पी0 सिंह, प्रभारी प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, चित्रकूट एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 विनोद शंकर सिंह, समाजकार्य विभाग, महात्मागांधी चित्रकूट, सतना, म0प्र0 उपस्थित रहे। समापन सत्र में वक्ता के रूप में डॉ0 महेन्द्र उपाध्याय, इतिहास विभाग, जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट उपस्थित रहे। अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 तिलकधारी सिंह ने की। समापन सत्र के अंत में संगोष्ठी संयोजक डॉ0 राजेश कुमार पाल ने सम्पूर्ण सेमिनार की रिपोर्ट प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन सहसंयोजक अमित कुमार सिंह एवं संचालन का कार्य डॉ0 संगीता द्वारा किया गया।

संगोष्ठी के निष्कर्ष

''चित्रकूट क्षेत्र. में पर्यटन की संभावनाएँ एवं समस्याएँ'' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के जो बिन्दु निर्धारित किये गये थे उन सबसे संबंधित व्याख्यान एवं शोध–पत्र पढ़े गये। इन व्याख्यानों एवं शोधपत्रों के प्रस्तुतीकरण के फलस्वरूप जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नवत् हैं–

- चित्रकूट क्षेत्र में पर्यटन की असीम संभावनाएँ हैं। धार्मिक स्थलों को सुंदरीकृत एवं परिक्रमा मार्ग में सुविधाएँ (यथा– छायादार वृक्ष, फूलदार पौधे, पानी, बैठने की व्यवस्थाएँ, टीन सेड इत्यादि) उपलब्ध कराकर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- जिस प्रकार रामदर्शन, आरोग्यधाम आदि स्थान किसी संरक्षक के हाथों में होने के कारण साफ–सुथरे एवं हरे–भरे हैं उसी प्रकार अन्य स्थानों को भी संरक्षकत्व प्रदान करते हुए उन्हें साफ–सुथरा व हरा–भरा बनाया जाना चाहिए जिससे पर्यटक आकर्षित हों।
- चित्रकूट क्षेत्र को अन्य पर्यटन स्थलों से जोड़ना चाहिए जिससे पर्यटक एक स्थान से दूसरे स्थान में आसानी से आ–जा सके।
- बुंदलेखण्ड के अन्य ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों को भी पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की जरूरत है ताकि पर्यटक चित्रकूट के साथ–साथ अन्य स्थलों का भी भ्रमण कर सकें।
- चित्रकूट में गरीबी की बाहुल्यता है। यहाँ भिखारियों/निराश्रित व्यक्ति भी पर्याप्त मात्रा में हैं। अतः इन्हें समुचित सुविधाएँ प्रदान करके एक निश्चित स्थान पर बसाने की जरूरत है ताकि पर्यटकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

- कुटीर उद्योगों को विकसित करना होगा। कुटीर उद्योग किसी क्षेत्र विशेष की पहचान होते हैं जो पर्यटकों को लुभाने का कार्य भी करते हैं।
- पर्यटन से इस क्षेत्र में नये–नये रोजगार के अवसर विकसित होंगे जो यहाँ के लोगों को आर्थिक मजबूती प्रदान करेंगे।
- वर्तमान में ग्रामीण पर्यटन एवं इको–टूरिज्म रोजगार के नये द्वार खोल रहे हैं। चित्रकूट क्षेत्र में भी इनकी संभावनाएँ तलाशनी चाहिए। चित्रकूट क्षेत्र में जैव विविधता को और अधिक समृद्ध बनाने की आवश्यकता है।
- लोक संस्कृति लोक की पहचान है। लोकनृत्य एवं लोकगीतों की जानकारी भी पर्यटकों को उपलब्ध करानी होगी।
- चित्रकूट के जितने भी धार्मिक स्थल हैं उनका विवरण वेबसाइट में उपलब्ध हो। वर्तमान युग भौतिकवादी युग है और लोग अब भौतिकता से ऊबने लगे हैं। ऐसे में चित्रकूट जैसे क्षेत्र का महात्म्य और बढ़ जाता है। चित्रकूट में जानकीकुण्ड आँखों का अस्पताल सेवा का अपने–आप में अनुपम उदाहरण है। ऐसे ही सेवा के अन्य केन्द्र भी खुलने चाहिए। रामायण मेला को और विकसित करने की आवश्यकता है। यहाँ पर बंदरों की संख्या बहुत अधिक है और ये धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं। इनके लिए भी सरकारी एवं गैरसरकारी दोनो स्तर पर खाद्यान्न एवं जल संसाधनों को विकसित करने की आवश्यकता है।
- पयस्वनी नदी को साफ–सुथरा रखने की अत्यंत आवश्यकता है। इसमें प्रवाहित होने वाले गंदे नाले एवं कचरों पर कठोरता से प्रतिबंध होना चाहिए। इसके लिए शासकीय एवं गैर शासकीय दोनो प्रकार के प्रयास आवश्यक हैं।
- चित्रकूट क्षेत्र एक अरसे से दस्यु प्रभावित क्षेत्र रहा है। यहाँ छोटे–बड़े डकैतों का बोल–बाला रहा है। इससे बाहरी लोग यहां आने से कुछ घबराते हैं। अतः इन गतिविधियों पर सरकारी स्तर पर मुकम्मल प्रयास करने होंगे ताकि लोग भयरहित होकर इस क्षेत्र में आ सके।

(डॉ0 राजेश कुमार पाल)
संयोजक
राष्ट्रीय संगोष्ठी